

B. A. part - III paper - VIII
विश्व-राष्ट्रों के रूप में (अमेरिका) का
उदय-पर-प्रकाश डालें।

①

उत्तर — विश्व-राष्ट्रों के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका का
उदय विश्व-राजनीति की एक महत्वपूर्ण और हाँकिकारी
घटना थी क्योंकि 1745 में द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने
के साथ ही विश्व-इतिहास का एक नया-समाप्त हुआ और
एक नवीन युग का सुरुवात हुआ। नवीन अनेक-राष्ट्रों
का उदय हुआ, नवीन महाशक्तियों का उदय हुआ, नवीन
सिद्धांतों एवं राजनीतिक व सामाजिक-प्रवृत्तियों का विकास
हुआ। विश्व-राजनीति के गैर-व्यवस्था की वागडोर-संयुक्त
राज्य-अमेरिका के हाथों में आगयी जबकि इसके पूर्व
ग्रेट-ब्रिटेन को विश्व-राजनीति का प्रमुख नेता और संचालक
समझा जाता था।

1776 ई. के स्वतंत्रता संग्राम के फलस्वरूप
संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राष्ट्र के रूप में उदय
हुआ और दो-शताब्दी के भी कम समय में अमेरिका ने
जिस तीव्र-गति से विकास की दौड़ लगाकर 1945 ई. के
बाद विश्व की राजनीति में अग्रता हासिल की, वह इतिहास
में एक विजाहा का विषय है।

स्वतंत्रता संग्राम ने अमेरिका के परिणामस्वरूप
अमेरिका स्थित सभी उपनिवेश स्वतंत्र घोषित कर दिये गये
और वे राज्यों के रूप में परिवर्तित हो गये। राज्य-संघ के
प्रमुखताओं में की गयी व्यवस्थाओं के आधार पर सभी
राज्यों का एक राष्ट्र के रूप में एकीकरण किया गया।
संयुक्त राज्य अमेरिका के नवीन संविधान की रचना के
लिए 1787 ई. में एक संवैधानिक-सम्मेलन का आयोजन
किया गया जिसकी अध्यक्षता जार्ज वाशिंगटन ने की थी।
1787 ई. में अमेरिकी संविधान-रूपी हो गया और
इसे कपी-वर्क लायू-कर दिया गया। जार्ज वाशिंगटन ने
स्वतंत्र अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में मनोवि-
किया गया। जार्ज वाशिंगटन ने अमेरिकी राज्यों की पूर्ण

1945 व संगठन पर सर्वोपेक्ष समान दिमा देना की विलीन
स्विति को दुबाले तथा आर्थिक स्थिति पर सर्वोपेक्ष समान
दिमा ना। देश की विलीन स्थिति को दुबाले तथा आर्थिक
स्थिति लाने के उद्देश्य में तत्कालीन कोषागार प्रचिन
अलेक्जेंडर हेमिल्टन द्वारा मुद्रा स्तर पर अनेक प्रयास
किए गए। उसने आर्थिक दुबाले से संबंधित अनेक योजनाओं
को लागू किया था।

इस अवधि में संयुक्त राज्य अमेरिका में
दलीन पद्धति का प्रयास हुआ था एक नए हेमिल्टन
ने कुछ संघ राज्य का समर्थन किया, जबकि
वाशिंगटन के कुछ प्रचिन व्यंग्य ने संघ
प्रोवा सिद्धांतों का मोरदार वकालत की इच्छाकार
उन सिद्धांतों नेवाओं ने प्रमत्ता संघीय दल तथा संघ
प्रोवा दल की स्थापना करके अमेरिका में दलीन
पद्धति का प्रयास किया। वर्तमान समय में संयुक्त राज्य
अमेरिका के गणतंत्रवा की दल ने संघीय दल के अधिकांश
सिद्धांतों को लागू पार कर लिया है। जबकि प्रजावाधिक
दल ने संघ प्रोवा दल के आदर्शों को अपनाना है
बाद में इस विदलन पद्धति ने अमेरिका में प्रजातंत्रीय
राजनीति व्यवस्था के कुशल संचालन हेतु मजबूत
आधार का निर्माण किया।

इस अवधि में अमेरिका की सरकार ने
अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों से वाक्य होकर तटस्थ
विदेश नीति का अनुसरण किया था। उसने यूरोपीय
मामलों के प्रति प्रत्यक्षता की नीति का पालन नहीं
हुए अमेरिका की आन्तरिक उन्नति एवं विकास
के लिए प्रयास किया। तटस्थता एवं प्रत्यक्षता की
विदेश नीति पर प्रकाश डालते हुए जॉर्ज वाशिंगटन
ने कहा था "हमारी विदेश नीति का आधार अत
सिद्धांत यह है कि हम अन्य देशों के साथ व्यापारिक
संबंध कायम रखेंगे, किन्तु राजनीतिक संबंधों

(3)
के प्रति उदासीन रहेंगे। हमारा उद्देश्य विदेशी राष्ट्रों के साथ स्वामी संबंधों से दूर रहना है।”

जॉर्ज वाशिंगटन के कार्यकाल में अमेरिका की सरकार ने अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों से निपटने के लिए नवोदय विदेश नीति का अनुसरण किया परन्तु अपनी नीति में परिवर्तन नहीं था, यह स्पष्ट है कि अमेरिका की सरकार ने पश्चिमी गोलार्ध के अन्य अमेरिकन राज्यों और एशिया के मामलों में प्रथमक (1) की नीति का पालन नहीं किया था। राष्ट्रपति जेफरसन के कार्यकाल में संयुक्त राज्य अमेरिका का साम्राज्य पहले की अपेक्षा बड़ा हुआ। 1801 ई. में जेफरसन ने प्रथमक (2) की नीति की व्याख्या करते हुए कहा था “ हम शांतिपूर्ण व्यापार सबके साथ करेंगे किन्तु बिना उल्लंघन करने वाली संबंधों किसी देश के साथ नहीं करेंगे।”

19 वीं शताब्दी के प्रथम दशक में जब फ्रांस और इंग्लैंड के मध्य संघर्ष अपनी पराजय सीमा पर था उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका ने नवोदय की नीति का कठोरता से पालन किया इसके बाद भी इंग्लैंड ने अमेरिका को सतृप्ति व्यापार की अनुमति प्रदान नहीं की। इस प्रसिद्ध के कारण अमेरिका के व्यापारिक हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अतः अमेरिकी विदेश नीति 1812 ई. में इंग्लैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध में किसी पक्ष को विजयी नहीं मिला। अतः दोनों आपसी वैमनस्यता को समाप्त करने को सहमत हो गये। इस युद्ध का अमेरिका की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा इसके जल-युद्ध अमेरिका की जनता में राष्ट्रीय एकता और आत्मविश्वास की गहरी भावना का उदय हुआ।

अमेरिका अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए कई योजनाओं को लागू किया। स्वदेशी उद्योगों को विकसित करने के लिए संरक्षण की तब्य विदेशी माल के आयात पर आयात कर लगाया। इस अवधि के अन्तर्गत अमेरिका में औद्योगिकीकरण की प्रविष्टि का प्रारम्भ गति से विकास हुआ। आलायन व संचालन साधनों के विकास के माध्यम से अमेरिका समृद्धि की उचाईयों को छूने लगा।

19 वीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में वैश्विक क्षेत्रों में कुछ ऐसी बदलाएँ पड़ित हुई जिसके कारण अमेरिका ने प्रथमकरण की नीति को छोड़कर हस्तक्षेप की नीति को अपनाया। अमेरिका की गल सैन्य 1814 ई में जापान को अपनी परम्परागत प्रथमकरण की नीति को त्याग करने के लिए विवश कर दिया। इस प्रकार अमेरिका की योजनाओं में चीन के बीच विरोध में हस्तक्षेप किया जाने प्रारम्भ हुआ। अमेरिका ने "वास्तविक राजनीतिक परिभाषा" में प्रथमकरण तथा उस पर आधारित गैर हस्तक्षेप और संधियों से इस रणनीति द्वारा सुरक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य प्रस्तुत किया। अन्तिम में गरीबों और अमेरिका एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में बनकर उभरा। 1819 ई में अमेरिका ने स्पेन से फ्लोरिडा का क्षेत्र खरीद लिया।

समाप्त